''आय के स्त्रोतों के संदर्भ में कौटिल्य के विचार का विशलेषण''

डॉ० जितेन्द्र गोपाल*

कौटिल्य के कई नाम संस्कृत साहित्य में आते हैं। जैसे, विष्णु गुप्त तथा चाणक्य। कौटिल्य तक्षशिला में अध्यापन कार्य करते थे। यहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य, कौटिल्य के शिष्य थे। तत्कालीन समय मगध के ऊपर महाद्मनन्द का शासन था। महापद्मनन्द के शासन को समाप्त करने और चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन को आरम्भ करने का श्रेय कौटिल्य को ही दिया जाता है। संस्कृत साहित्य के कुछ ग्रन्थों के अनुसार यह कहा जाता है कि महापद्मनन्द के शासन से उस राज्य के कुछ प्रतिष्ठित लोग बहुत अप्रसन्न हो गये थे। वे चाहते थे कि किसी प्रकार नन्द का शासन समाप्त हो अतः वे लोग ऐसे व्यक्ति की खोज में थे जो यह कार्य सम्पादित कर सके। ऐसा कहा जाता है कि उन लोगों ने एक स्थान पर एक ऐसे काले व्यक्ति को देखा जो कूश की जड़ खोदकर उसमें मट्ढा डाल रहा था। लोगों के पूछने पर उसने बताया कि यह कूश मेरे पैर में गड़ गया था इसलिए जबतक इसे समूल नष्ट नहीं कर दूँगा मैं कोई अन्य कार्य नहीं करूँगा। इस बात को सुनकर उन लोगो ंने सोचा कि महापद्मनन्द का शासन समाप्त करने के लिए यही उपयुक्त है। अतः उन लोगो ंने बिना नन्द से आज्ञा लिए उस व्यक्ति को भोाजने करने लिए निमंत्रत दि दिया। ब्राह्मणों के बीच में एक काले–कलूटे व्यक्ति को देखकर नन्द ने उसे बहार निकल जाने की आज्ञा दी। इस अपमान के कारण उस व्यक्ति ने अपनी शिखा खोल कर यह प्रतिज्ञा की कि जबतक में महापद्मनन्द का शासन समाप्त नहीं करूँगा तब तक मैं शिखा नहीं बाँधूंगा। उस व्यक्ति ने कूटनीति के प्रयोग से नन्द को मगध के राज सिंहासन से हटाकर चन्द्रगुप्त को राज सिंघासन पर बैठाया। चाणक्य का सम्पूर्ण जीवन अत्यधिक सादा रहा। चन्द्रगुप्त जैसे प्रभावशाली सम्राट का मंत्री होते हुए भी वह एक झोपड़ी में रहता था। तथा उस झोपड़ी में मात्र आवश्यक आवश्यकताओं संबंधी वस्तुएँ ही रहती थीं।

***ग्राम–भागीरथ बिगहा राजा बाजार, जहानाबाद**

आय –

कौटिल्य ने आय प्राप्ति के अनेक साधन बताये हैं। समाहर्ता, गोप तथा स्थानिक आदि अधिकारियों के माध्यम से आय प्राप्त की जाती थी। इन सभी का अपना अपना क्षेत्र बंटा हुआ था। वे आय तथा व्यय का पूरा विवरण रखते थे। उनके पास विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित लोगों का लेखा–जोखा रहता था।103 उस समय कर एवं कृषि से प्राप्त उत्पादन की हिस्सा ही आय का प्रमुख स्त्रोत था। खेती करने योग्य भूमि पर कर लगा कर आय में वृद्धि की जाती थी।

राजकीय आय के अन्य स्त्रोत वैदिक काल में बताया जा चुका है कि आय के मुख्य स्त्रोत 'बलि' तथा बूटी थे। धीरे–धीरे सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ स्त्रोतों की संख्या में भारी वृद्धि हो गई। कौटिल्य ने भी आय के अनेक साधन बताये हैं। वैदिक काल में मुख्यतः तीन प्रकार के कर से प्राप्त होने वाले आय के साधन थे ––

1. कृषि उत्पादन का भाग
2. सोने पर कर
3. पशु कर

इसके अतिरिक्त व्यवसायिक दृष्टिकोण के और अधिक कर लगते गये, जो निम्न प्रकार बताये गये हैं ––

1. कलाकार कर
2. श्रमकर
3. वाणिज्य वस्तुओं पर कर
4. अपराध कर
5. मृत्यु कर
6. खोयी हुई वस्तु पर कर

आचार्य कौटिल्य ने राजा को 'कोष' वृद्धि का परामर्श दिया है। उनका कहना है कि 'अल्प कोषों हि राजा पौरजान पदानेव ग्रस्ते' अर्थात् अल्प कोष के कारण ही राजा तथा प्रजा को कष्ट प्राप्त होता था। कौटिल्य के द्वारा बताये गये आय के स्त्रोत निम्न प्रकार है ––

1. विभिन्न प्रकार के भूमिकर, उत्पादक भूमि कर, शहरों में मकान कर, बलिकर,आकस्मिक कर आदि।
2. बाजार में बेची जाने वाली वस्तुओं पर कर, आयात–निर्यात पर कर।

3. मार्गकर (बर्तनी) नहर कर (जलभाग, तरदेयः) सामान लादने वाली भारी गाड़ियों पर कर, अन्य व्यावहारिक कर।
4. कलाकार कर (कारू शिल्पगण) मत्स्य कर।
5. वैश्या तथा द्यूत कर, नशीली वस्तुओं तथा कसाई खानों पर कर।
6. सम्पति कर – वनोत्पादन कर, खान कर – नमक तथा अन्य वस्तुओं का एकाधिकारिक कर आदि।
7. श्रमिक कर
8. कानूनी न्यायालय कर
9. आकस्मिक आय कर
10. उत्संग आदि आकस्मिक कर
11. ऋण पर ब्याज
12. खैराती कर

कौटिल्य ने इन समस्त आय के स्त्रोतों का सम्यक् विवेचन कर आर्थिक विचारों में दृढ़ता उत्पन्न की है।

कौटिल्य के समय उत्पादकता के आधार पर ग्रामों तथा भूमि का विभाजन पर दिया गया था । कृषि की उत्पादकता, श्रमिक तथा सिंचाई के साधनों पर निर्भर करती थी। कौटिल्य के अनुसार समस्त प्राचीन काल मे ंकोश (राष्ट्र) वृद्धि के लिये सतत् प्रयत्न किया गया है। इस समय कर अथवा चुंगी का भुगतान नकद (सिक्के) तथा वस्तुओं के रूप में किया जाता था। कौटिल्य ने सेनाभक्तम, उत्संग, पार्श्व, परिहिनिका, औपायनिका आदि कर के प्रारूप बताये हैं। सामान्यतः भूमि कर के भी विभिन्न प्रकारों के बारे में कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में विवरण प्रस्तुत किया है।

लगान –

भूस्वामी को जो उत्पादन लागत से अतिरिक्त आय प्राप्त होती है, उसे लगान कहते हैं। भूमि की उत्पादन क्षमता उसके उपजाऊपन तथा उर्वरा शक्ति पर निर्भर करती है और लगान की प्राप्ति व्यापारिक साधनों तथा उनकी लागत अथवा बाजार के संगठन पर आधारित है। विचारकों ने भूमि को कई लोगों में विभिक्त किया है। अतः प्रत्येक प्रकार की भूमि से अलग–अलग लाभ अथवा लगान भी प्राप्त होता है। कौटिल्य ने विभन्न प्रकार की भूमि से पाये जाने वाले लाभ का विवेचन किया है।

संदर्भ सूची :

1. कौटलीय अर्थशास्त्रम् , अधिकरण 2/ अध्याय 35, 2–4 .
2. कौटलीय अर्थशास्त्रम् अधिकरण 2, शुक्लाध्यक्ष एवं शुल्कव्यवहार प्रकाशन – अध्याय 21–22 .
3. कौटलीय अर्थशास्त्रम् अधिकरण 2, अध्याय 1–2 .